

**संसाधित्र पुं.** (तत्.) 1. ऐसे यंत्र या साधन जिनसे खाद्य वस्तुओं, कच्ची सामग्रियों, खनिजों आदि का प्रसंस्करण किया जा सके 2. मिश्रण बनाने वाला, पिसाई आदि करने का यंत्र।

**संसाध्य वि.** (तत्.) 1. जिस काम को पूरा किया जा सके 2. दयनीय, जिसे दबाया या जीता जा सके 3. करणीय, जिस काम को किया जा सके।

**संसार पुं.** (तत्.) 1. संसरण, संसरण करने वाला, निरंतर चलते रहना 2. निरंतर एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना जैसे- ठोस से द्रव, द्रव से गैस पुनः यही क्रिया होना जन्म-मरण, पुष्पन-फलन एवं पुनः बीज से पौधों का जन्म, भवचक्र, जीवन चक्र 3. विश्व-प्रपंच और माया 4. घर-गृहस्थी, दुनियादारी का जीवन 5. ब्रह्माण्ड, इहलोक, मर्त्यलोक 6. समूह ला.अर्थ. 7. मनुष्य समुदाय, अनेक लोग (शैव.) 8. प्रपंचमय जगत् जो शिव का व्यक्त रूप है।

**संसार गुरु पुं.** (तत्.) 1. जगद्गुरु, संसार को उपदेश देने वाला या संसार का मार्गदर्शन करने वाला 2. कामदेव, श्रीकृष्ण।

**संसार-चक्र पुं.** (तत्.) 1. जन्म-मरण का चक्र, चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण के चक्र में घूमना 2. संसार का मायाजाल या झंझट, सांसारिक प्रपंच 3. संसार में निरंतर होने वाला परिवर्तन।

**संसारण पुं.** (तत्.) चलाना, आगे बढ़ाना, गति देना।

**संसार-तिलक पुं.** (तत्.) एक बढिया किस्म का चावल, धान।

**संसार पथ पुं.** (तत्.) 1. संसार में आने का मार्ग 2. स्त्री योनि, भग, जननेंद्रिय।

**संसार भावन पुं.** (तत्.) संसार को दुःखमय समझना।

**संसार सारथि पुं.** (तत्.) 1. संसार को चलाने वाला, परमेश्वर, ब्रह्म 2. शिव।

**संसारी वि.** (तत्.) 1. संसार से संबंधित, लौकिक 2. गृहस्थी, गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाला 3. जन्म-मरण धर्मा जीव, जो बार बार जन्म

लेता है और मरता है 4. घर-गृहस्थी के झंझटों में संलग्न 5. दुनियादारी, लोक व्यवहार में कुशल।

**संसिद्धि स्त्री.** (तत्.) 1. संसिद्ध होने की अवस्था या भाव 2. सफलता 3. पक्वता, पूर्णता 4. स्वस्थता, नीरोगता 5. परिणाम 6. मुक्ति 7. अवश्यभावी 8. प्रकृति स्वभाव 9. मदमत्त स्त्री।

**संसिद्धि वि.** (तत्.) 1. जो कार्य अच्छी तरह या पूर्ण रूप से किया गया हो 2. जो खाद्य पदार्थ अच्छी तरह से सीझा या पका हो 3. लब्ध, प्राप्त 4. नीरोग, स्वस्थ 5. उद्यत, प्रस्तुत 6. कुशल, दक्ष, निपुण 7. योग साधना से सिद्धि प्राप्त व्यक्ति।

**संसी पुं.** (तत्.) दे. स्त्री 'संडसी', चिमटी।

**संसुप्त वि.** (तत्.) गहरी नींद में सोया हुआ।

**संसुप्ति स्त्री.** (तत्.) गहरी नींद, गहन निद्रा।

**संसूचक वि.** (तत्.) 1. सूचित करने वाला, बताने वाला, प्रकट करने वाला 2. भेद या रहस्य बतलाने वाला 3. समझाने-बुझाने वाला 4. डांट-डपट करने वाला।

**संसूचन पुं.** (तत्.) 1. बताना, प्रकट करना, भेद बताना, रहस्य बताना 2. समझाना बुझाना, डांटना-डपटना।

**संसूची वि.** (तत्.) संसूचक, सूचना या जानकारी देने वाला।

**संसूच्य वि.** (तत्.) संसूचन के योग्य, संसूचन का अधिकारी या पात्र, जिसका संसूचन किया जाना हो।

**संसृति स्त्री.** (तत्.) 1. आवागमन का चक्कर, संसार में बार बार जन्म लेने की प्रक्रिया 2. संसार, जगत।

**संसृष्ट वि.** (तत्.) 1. एक साथ उत्पन्न या अविर्भूत 2. संश्लिष्ट, परस्पर मिले हुए 3. जो किसी के अंतर्गत या अंतर्भूत हो 4. बहुत मेल जोल वाला, हिला मिला हुआ 5. संपन्न या पूर्ण किया गया कार्य 6. एकत्रित, संग्रहीत 7.